Edit with WPS Office

St. Lawrence High School

A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

Hindi Study Material (03)

Class- 11 पाठ - सूरदास के पद (भाग १)

Date: 29/06/2020

कवि परिचय

हिंदी साहित्य में भगवान श्री कृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि महात्मा सूरदास हिंदी के सूर्य माने जाती है। इनका जन्म ***1483*** ईस्वी में 'रुनकता' नामक गांव में हुआ। कुछ विद्वानों का मत हैं कि सूर का जन्म 'सीही' नामक ग्राम में एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ है। सूरदास के पिता रामदास से गायक थे। उनके गुरु स्वामी वल्लभाचार्य से उनकी भेंट आगरा के समीप गुरुघाट पर हुआ। स्वामी वल्लभाचार्य में सूरदास को पुष्टिमार्ग में दीक्षित कर कृष्णलीला के पद गाने का आदेश दिया सूरदास की मृत्यु गोवर्धन के निकट 'पारसोली ग्राम' में ***1584*** ई. में हुई।
इनकी प्रमुख तीन रचनाएं हैं- सूरसागर, सूर सारावली एवं साहित्य लहरी।
सूरदास जी अपने काव्य में बालकृष्ण की लीलाओं की मनोरम झांकी पेश किए हैं। उसी के साथ उन्होंने कृष्ण व गोपियों के अनन्य प्रेम का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। सूरदास जी ने भक्ति व विनय संबंधी पदों की भी रचना की है।
इनकी काव्यगत भाषा सरस वह मधुर ब्रजभाषा है।

सूरदास की भक्ति भावना

भक्ति शब्द की निर्मिति भज् धातु में क्वीन प्रत्यय लगाने से हुई है, जिसका अर्थ है ईश्वर के प्रति सेवा भाव।
सूरदास अष्टछाप अर्थात कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वोत्कृष्ट भक्तों के रूप में प्रतिष्ठित है।उनकी भक्ति भावना मूलतः दो रूपों में प्रकट हुई है। पहला रूप विनय, दैन्य और आत्म निवेदन का है तो दूसरा रूप कृष्ण की लीला गान का है। सूरदास की भक्ति सामाजिक अभिलक्षण का एक उदाहरण है। सूरदास का आत्म निवेदन मात्र उनका ही नहीं है बल्कि उन्होंने अपने माध्यम से उस पूरे युग की भावना को व्यक्त किया है।
सूरदास की भ
क्ति की असली पहचान उस युग की सामाजिक परिस्थिति से है। अपने युग के उस निराशापूर्ण वातावरण को आशा में बदलने के लिए वह वात्सल्य और माधुर्य भाव से युक्त भक्ति का प्रणयन करते है। मनुष्यता के सौंदर्यपूर्ण और माधुर्यमय पक्ष को दिखाकर सूरदास जी ने जीवन के प्रति अनुराग जगाया है। उन्होंने भक्ति के सरल और स्वाभाविक मार्ग का निर्माण किया है।
सूरदास वल्लभाचार्या जी के शिष्य थे अपने गुणों से उन्होंने भक्ति मार्ग में भगवान का प्रेममय स्वरूप को प्रतिष्ठित करने की प्रेरणा पाई थी। सूर ने अपने पद में इसका संकेत इस प्रकार दिया है-
"सीत उष्ण सुख- दुख नहीं मानै, स्थानीय एक अच्छी सोच राचैं।
जाय समय सूवा निधि में, बहुरि ना उलट जगत में नाचे वल्लभाचार्य द्वारा चलाए गए पुष्टिमार्ग मैं नाचै।"
वल्लभाचार्या द्वारा चलाए गए 'पुष्टिमार्ग' में दीक्षित होकर सूरदास आदि कवियों ने अत्यंत मूल्यवान कृष्ण साहित्य का सृजन किया। पुष्टिमार्ग का अर्थ है भगवान का अनुग्रह। इन कवियों का का मत है कि भगवान के अनुग्रह (पोषण) के बिना जीव को मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। सूरदास को 'पुष्टिमार्ग का जहाज' कहा जाता है।
मुक्ति की प्राप्ति अर्थात 'मोक्ष की प्राप्ति' के लिए भक्ति ही एकमात्र साधन है। सूरदास वल्लभाचार्या की मान्यताओं का ज्यों का त्यों अनुसरण नहीं करते बल्कि अपनी मौलिक प्रतिभा से भक्ति का सहज एवं स्वीकार्य मार्ग प्रस्तुत करते हैं।
सूर की भक्ति भावना गीती काव्य के माध्यम से व्यक्त हुई है। सूर ने भक्ति के माध्यम से जनजीवन में नई शक्ति का संचार किया है। सूर की भक्ति भावना का मूल्यांकन करते हुए डॉ शिवकुमार मिश्र ने लिखा है- "सूर की भक्ति कविता वैराग्य, निवृत्ति अथवा परलोक की चिंता नहीं करती बल्कि वह जीवन के प्रति असीम अनुराग, लोकजीवन के प्रति अप्रतिहत निष्ठा तथा प्रवृत्ति परक जीवन पर बल देती है।"

सूरदास की काव्यगत विशेषताएं

काव्य कला के अनुसार सूर के काव्य में निम्नलिखित विशेषताएं उपलब्ध होती है*:*

क) भावपक्षीय विशेषताएँ:

i) वात्सल्य वर्णन-

हिंदी साहित्य में सूरदास का वात्सल्य वर्णन अद्वितीय स्थान प्राप्त करता है। उन्होंने अपने काव्य में श्रीकृष्ण की विविध बाल-लीलाओं का सुंदर मनोरम झांकी प्रस्तुत की हैं। जैसे माता यशोदा का श्री कृष्ण को पालने में झूलाना, श्री कृष्ण का घुटनों के बल चलना, किलकारी मारना, सखाओ के साथ खेलने जाना, उनकी शिकायत करना, बलराम का चिढ़ाना, माखन की चोरी करना

Edit with WPS Office

आदि विविध प्रसंगों को सूर ने अत्यंत तन्मयता तथा चमत्करिता के साथ प्रस्तुत किया है। माखन चुराने पर जब श्री कृष्ण पकड़े जाते है तो वे तुरंत बोल पड़ते हैं-

"मैया मैं नहीं माखन खायो।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि, मेरे मुख लिपटायो।।"

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उनके वात्सल्य वर्णन से प्रेरित होकर लिखा है- "वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आंखों से किया, उतना संसार के किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का वे कोना कोना झांक आए।"

<u>श्रृंगार वर्णन</u>

श्रृंगार वर्णन में सूर को अद्भुत सफलता मिली है। इन्होंने कृष्ण- राधा और गोपियों की संयोग अवस्था की अनेक आकर्षण चित्र प्रस्तुत किया किए हैं। साथ ही इन्होंने वियोग के भी अनेक चित्र प्रस्तुत किए हैं। जैसे श्री कृष्ण मथुरा चले जाने के कारणवश गोपियाँ, राधा, यशोदा, पशु- पक्षी ब्रज के सभी जड़- चेतन उनके विरह- वियोग में व्याकुल हो उठते हैं-

<u>भक्ति भावना</u>

सूर की भक्ति 'सखा भाव' की है। श्री कृष्ण को वह अपना परम मित्र मानते हैं, इसीलिए उनसे उनका कोई पर्दा नहीं है। सूर की भक्ति भावना में अन्यथा, निश्छलता एवं पावनता का विद्यमान है।

<u>प्रकृति चित्रण</u>

सूरदास के काव्य में प्रकृति का प्रयोग को सही पृष्ठभूमि के रूप में, उद्दीपन के रूप में, अलंकार के रूप में किया गया है। गोपियों की विरह वर्णन में प्रकृति का प्रयोग सर्वाधिक मात्रा में प्राप्त होता है।

<u>प्रेम की अलौकिकता</u>

राधा- कृष्ण व गोपी- कृष्ण प्रेम में सूर ने प्रेम की अलौकिकता प्रदर्शित किया है। उद्धव गोपियों को निराकार ब्रह्म का उपदेश देते हैं परंतु वे किसी भी प्रकार की दृष्टिकोण को स्वीकार न करके श्री कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम का परिचय देती है।

<u>ख) कलापक्षीय विशेषताएं</u>

<u>भाषा</u>- सूरदास जी ने ब्रजराज श्री कृष्ण की जन्मभूमि ब्रज के लोक प्रचलित भाषा को अपने काव्य का आधार बनाया है। इन्होंने बोलचाल की भाषा को साहित्यिक रूप प्रदान किया है। लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में चमत्कार उत्पन्न हुआ है। इनके काव्य में कई- कई अवधि, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है। परंतु भाषा सर्वत्र सरल एवं प्रभावपूर्ण है।

<u>शैली</u>

सूर ने मुक्तक काव्य शैली को अपनाया है। कथा वर्णन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। समग्रत: उनकी शैली सरल एवं प्रभावशाली है।

<u>अलंकार</u>

सूर ने अलंकारों का स्वभाविक प्रयोग किया है। उनमें कृत्रिमता कही नहीं है। उनके काव्य में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, दृष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता हैं।

<u>छंद</u>

सूरदास ने अपने काव्य में चौपाई, दोहा, रोला, छप्पय, सवैया तथा घनाक्षरी आदि विभिन्न प्रकार के परंपरागत छंदों का प्रयोग किया है।

<u>गेयात्मकता</u>

सूर का संपूर्ण काव्य गेय है। उनके सभी पद किसी न किसी राग रागिनी पर आधारित है।

Teacher's Name - Riya Saha